

# वार्षिक भविष्यफल

## नमूना उपयोगकर्ता

जन्म: 1990-01-15 10:30 · नई दिल्ली

My Jyotish AI



# विषय सूची

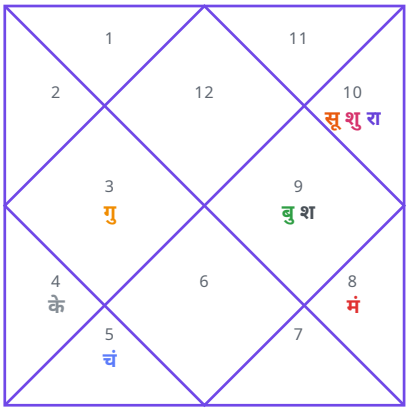

1. परिचय ..... 3
2. कुंडली चक्र ..... 3
3. विंशोत्तरी महादशा ..... 3
4. इस अवधि की अंतर्दशाएँ ..... 4
5. गोचर (शनि, गुरु, राहु) ..... 4
6. साढ़े साती व ढैय्या ..... 4
7. उपाय ..... 4

## 1 परिचय

| | | |
|---|---|---|
| नाम<br>**नमूना उपयोगकर्ता** | जन्म<br>**1990-01-15 10:30** | स्थान<br>**नई दिल्ली** |
| लग्न<br>**मीन 1°25′** | चंद्र राशि<br>**सिंह** | नक्षत्र<br>**पूर्वा फाल्गुनी — चरण 3** |
| अयनांश<br>**Lahiri 23.7179°** | | |

यह वार्षिक भविष्यफल आपकी जन्म कुंडली की विंशोत्तरी दशा (इस अवधि में चलने वाली अंतर्दशाएँ) और शनि, गुरु व राहु के गोचर (आपकी चंद्र राशि से) के आधार पर तैयार किया गया है। तिथियाँ गणना पर आधारित हैं; फल संभावित प्रवृत्तियाँ बताते हैं — निर्णय अपनी परिस्थितियों और विवेक से लें।

## 2 कुंडली चक्र




लग्न कुंडली (D1)




लग्न कुंडली (D1) — South

## 3 विंशोत्तरी महादशा

| | | |
|---|---|---|
| **शुक्र** | 07 नव॰ 1979 — 07 नव॰ 1999 | |
| **सूर्य** | 07 नव॰ 1999 — 06 नव॰ 2005 | |
| **चंद्र** | 06 नव॰ 2005 — 07 नव॰ 2015 | |
| **मंगल** | 07 नव॰ 2015 — 07 नव॰ 2022 | |
| **राहु**<br>गुरु: 20 जुल॰ 2025 – 13 दिस॰ 2027 | 07 नव॰ 2022 — 06 नव॰ 2040 | **वर्तमान** |
| **गुरु** | 06 नव॰ 2040 — 06 नव॰ 2056 | |
| **शनि** | 06 नव॰ 2056 — 07 नव॰ 2075 | |
| **बुध** | 07 नव॰ 2075 — 07 नव॰ 2092 | |
| **केतु** | 07 नव॰ 2092 — 07 नव॰ 2099 | |

## 4 इस अवधि की अंतर्दशाएँ

### राहु – गुरु (20 जुल॰ 2025 – 13 दिस॰ 2027)

20 जुल॰ 2025 से 13 दिस॰ 2027 तक राहु की महादशा में गुरु की अंतर्दशा चलेगी। इस समय ज्ञान, धर्म, संतान, धन-वृद्धि और गुरुजनों का सहयोग प्रमुख रहता है; शुभ कार्यों और उच्च शिक्षा के लिए अच्छा समय माना जाता है। राहु की महादशा का समग्र स्वर महत्वाकांक्षा और अप्रत्याशित परिवर्तनों का है। दोनों ग्रहों का संबंध सम है, इसलिए परिणाम मुख्यतः आपके प्रयास और कुंडली में उनकी स्थिति पर निर्भर करते हैं।

## गोचर (शनि, गुरु, राहु)

### शनि — 29 मार्च 2025 – 03 जून 2027

29 मार्च 2025 से 03 जून 2027 तक: चंद्र राशि से आठवें भाव में शनि का गोचर अचानक परिवर्तन और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों में सावधानी और धैर्य की माँग करता है। यह अष्टम ढैय्या की अवधि है। नियमित परिश्रम, अनुशासन और ज़रूरतमंदों की सेवा इस गोचर को संतुलित करती है।

### शनि — 03 जून 2027 – 20 अक्टू॰ 2027

03 जून 2027 से 20 अक्टू॰ 2027 तक: चंद्र राशि से नौवें भाव में शनि का गोचर भाग्य और धर्म से जुड़े विषयों में सावधानी और धैर्य की माँग करता है। नियमित परिश्रम, अनुशासन और ज़रूरतमंदों की सेवा इस गोचर को संतुलित करती है।

### गुरु — 02 जून 2026 – 26 जून 2027

02 जून 2026 से 26 जून 2027 तक: चंद्र राशि से बारहवें भाव में गुरु का गोचर खर्च और विश्राम से जुड़े विषयों में सावधानी और धैर्य की माँग करता है। गुरुजनों का सम्मान और ज्ञान-अर्जन इस गोचर के शुभ फल बढ़ाते हैं।

### गुरु — 31 अक्टू॰ 2026 – 26 नव॰ 2027

31 अक्टू॰ 2026 से 26 नव॰ 2027 तक: चंद्र राशि से पहले भाव में गुरु का गोचर मन और स्वास्थ्य से जुड़े विषयों में सावधानी और धैर्य की माँग करता है। गुरुजनों का सम्मान और ज्ञान-अर्जन इस गोचर के शुभ फल बढ़ाते हैं।

### राहु — 18 मई 2025 – 05 दिस॰ 2026

18 मई 2025 से 05 दिस॰ 2026 तक: चंद्र राशि से सातवें भाव में राहु का गोचर संबंध और साझेदारी से जुड़े विषयों में सावधानी और धैर्य की माँग करता है। स्पष्ट सोच, ईमानदारी और नशे से दूरी राहु के गोचर में रक्षा करती है।

### राहु — 05 दिस॰ 2026 – 24 जून 2028

05 दिस॰ 2026 से 24 जून 2028 तक: चंद्र राशि से छठे भाव में राहु का गोचर शुभ माना जाता है; प्रतिस्पर्धा और स्वास्थ्य-अनुशासन से जुड़े विषयों में प्रगति और लाभ के योग बनते हैं। स्पष्ट सोच, ईमानदारी और नशे से दूरी राहु के गोचर में रक्षा करती है।

## साढ़े साती व ढैय्या

| | | |
|---|---|---|
| **ढैय्या (अष्टम) (मीन)** | 08 अक्टू॰ 2026 — 03 जून 2027 | **वर्तमान** |

## 7 उपाय

आपकी कुंडली में चंद्र को बल देने की आवश्यकता है। सोमवार को शिवजी को जल या दूध अर्पित करें और "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः" का जप करें। चावल, दूध, सफ़ेद वस्त्र या चाँदी का दान करें; माता की सेवा, पर्याप्त नींद और ध्यान मन को स्थिर रखते हैं।

आपकी कुंडली में शुक्र को बल देने की आवश्यकता है। शुक्रवार को लक्ष्मी जी की पूजा करें और "ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः" का जप करें। चावल, चीनी, सफ़ेद वस्त्र या इत्र का दान करें; स्वच्छता, कला-संगीत और जीवनसाथी का सम्मान शुक्र को प्रसन्न करते हैं।

आपकी कुंडली में शनि को बल देने की आवश्यकता है। शनिवार को पीपल के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाएँ और "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः" का जप करें। काले तिल, सरसों का तेल या काले वस्त्र का दान करें; श्रमिकों, बुज़ुर्गों और ज़रूरतमंदों की सेवा तथा ईमानदार परिश्रम सबसे बड़ा उपाय है।

आपकी कुंडली में राहु के प्रभाव को शांत और संतुलित करने की आवश्यकता है। दुर्गा सप्तशती या दुर्गा चालीसा का पाठ करें और "ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः" का जप करें। ज़रूरतमंदों को कंबल का दान करें; नशे और जल्दबाज़ी के निर्णयों से दूर रहना राहु के प्रभाव को संतुलित करता है।